

# बदलती राहें

Gunjān

वर्ष 01, अंक 08

धर्मशाला, सोमवार, 20 अप्रैल 2015

## दोस्तों संग अच्छे-बूरे काम करते हैं हिमाचल के युवा

हिमाचल प्रदेश के युवा दोस्ती पर यकीन रखते हैं। उनके लिए जीवन में हर पल दोस्त जरूरी है। हिमाचल के युवा अपने दोस्तों की मदद से ही अच्छे व बुरे कामों को अंजाम देते हैं। यहां के युवाओं के लिए दोस्ती इतनी अहम है कि एक युवा औसतन 17 दोस्त बनाता है। यह खुलासा हिमाचल में करवाए गए यूथ हेल्थ सर्वे 2014 में हुआ है। यह सर्वे हिमाचल प्रदेश के राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन के सहयोग से नेशनल इंस्टीच्यूट आफ मेंटल हेल्थ एंड न्यूरो साइंसिज बंगलूरु ने करवाया था।

सर्वे के अनुसार हिमाचल प्रदेश के प्रत्येक युवा के औसतन 17 दोस्त होते हैं। यहां के युवा अपना अधिकतर समय अपने इन दोस्तों के साथ ही गुजारते हैं। चाहे पढ़ाई का मामला हो या फिर खेलकूद व लड़ाई-झगड़े या फिर धूम्रपान, शराब व

नशे की अन्य आदतें हों, प्रदेश के युवा ये सारे अच्छे-बूरे काम अपने दोस्तों की संगत में ही करते हैं। सर्वे के अनुसार प्रदेश के 93.96 फीसदी युवा अपने साथियों के साथ रहकर मौज-मस्ती में समय गुजारते हैं। अच्छी बात यह है कि 93.96 फीसदी

● प्रदेश के युवाओं के औसतन दोस्तों की संख्या 17

● 93.96 फीसदी युवा दोस्तों संग करते हैं पढ़ाई व मौजमस्ती

● 29.26 फीसदी धूम्रपान व 26.08 फीसदी शराब भी पीते हैं दोस्तों संग

युवा पढ़ाई भी अपने साथियों के साथ मिल बैठ कर ही करते हैं। इतना ही नहीं खाने के मामले में भी 45 फीसदी युवा अपने साथियों के साथ मिल बैठ कर खाना खाना पसंद करते हैं। वहीं प्रदेश के युवाओं में बुरी लत का कारण भी उनके दोस्त ही पाए

गए हैं। सर्वे बताता है कि करीब एक-तिहाई युवा अपने साथियों या दोस्तों की संगत में ही रहते हुए धूम्रपान करना और शराब पीना सीखते हैं। प्रास आंकड़ों के अनुसार 29.26 फीसदी युवा साथियों संग धूम्रपान करते हैं और 26.08 फीसदी अपने साथियों के साथ शराब पीते हैं। अपराध के मामलों में भी युवा अपने साथियों की मदद से कानून अपने हाथों में लेते पाए गए हैं। सर्वे के अनुसार प्रदेश के 3.87 फीसदी युवा अपने दोस्तों की मदद से आपराधिक गतिविधियों में शामिल होते हैं। वहीं 4.25 फीसदी युवा अपने साथियों के सहयोग से गैंग फाइट्स में शामिल पाए गए हैं। वहीं लड़कियों को छेड़ने

के मामलों में भी प्रदेश के युवा अपने साथियों का सहयोग लेते हैं। यानि वे अपने दोस्तों की संगत में ही ऐसी घटनाओं को ज्यादा संख्या में अंजाम देते हैं। यह संख्या सर्वे में 12.4 फीसदी पाई गई है।

### दो-तिहाई युवा करते हैं मोबाइल फोन का इस्तेमाल

प्रदेश की दो-तिहाई युवा आबादी मोबाइल फोन का इस्तेमाल करती है। सर्वे के अनुसार प्रदेश के 63.21 फीसदी युवा मोबाइल फोन रखते हैं। इनमें लड़कों की संख्या 67.81 फीसदी व लड़कियों की संख्या 58.35 फीसदी दर्ज की गई है। वहीं मोबाइल के आदि हो चुके युवाओं की तादात प्रदेश में 19.62 फीसदी पाई गई है। इनमें लड़कों की संख्या 25.67 फीसदी व लड़कियों की संख्या 13.22 फीसदी है।

### 96.51 फीसदी युवाओं को टीवी देखने का चस्का

● टीवी सीरियलों की दिवानी हैं 78.49 फीसदी लड़कियां ● 38.76 फीसदी लड़कों को हैं फिल्में देखने का शौक

हिमाचल के युवाओं को टीवी देखने का भी चस्का है। सर्वे रिपोर्ट के अनुसार प्रदेश के 96.51 फीसदी युवा टीवी देखते हैं। प्रदेश के युवाओं द्वारा प्रतिदिन टीवी देखने का औसत समय दो घंटे दर्ज किया गया है। यानि प्रत्येक युवा इतना समय टीवी के सामने हर रोज बिताता है। सर्वे में यह भी पता चला है कि 47.32 फीसदी युवा टीवी सीरियलों के दिवाने हैं। सीरियलों के दिवानों में लड़कियों की संख्या 78.49 फीसदी और लड़कों की संख्या महज 17.67 फीसदी है।

वहीं फिल्में देखने वालों की संख्या 23.34 फीसदी दर्ज की गई है। इनमें से 38.76 फीसदी लड़के फिल्मों के दिवाने हैं। महज 7.12 फीसदी लड़कियां ही टीवी पर फिल्में देखना पसंद करती हैं। स्पोर्ट्स कार्यक्रम देखने में लड़कों की संख्या लड़कियों से कहीं ज्यादा है। इसका औसत क्रमशः 17.74 व 0.66 फीसदी रहा।

प्रदेश में इंटरनेट का इस्तेमाल करने वाले युवाओं की तादात 37.24 फीसदी पाई गई है। इनमें 50.07 फीसदी लड़के व 23.67 फीसदी लड़कियां शामिल हैं। प्रदेश का प्रत्येक युवा हर

सप्ताह औसतन 95.54 मिनट इंटरनेट इस्तेमाल करता है। लड़के हर सप्ताह औसतन 108.71 मिनट व लड़कियां औसतन 85 मिनट इंटरनेट इस्तेमाल करती हैं। इसमें से 35.81 फीसदी समय ही शैक्षणिक गतिविधियों में खर्च होता है। वहीं आधे से ज्यादा 50.56 फीसदी समय अन्य गतिविधियों पर खर्च किया जाता है।

अश्लील वेबसाइट देखने में महज 1.30 फीसदी समय ही खर्च किया जाता है। वहीं प्रदेश के युवा हर सप्ताह औसतन 65.51 मिनट वीडियो देखने में समय व्यतित करते हैं। इसमें से 59.65 फीसदी समय फिल्में देखने में, 17.54 फीसदी समय अन्य कार्यक्रम देखने में, 14.04 फीसदी समय शैक्षणिक जानकारी देखने में और 7.02 फीसदी समय अश्लील सामग्री देखने में व्यतित होता है। वहीं प्रदेश के 13.75 फीसदी युवा वीडियो गेम भी खेलते हैं। इस पर हर सप्ताह औसतन 28.01 मिनट समय खर्च किया जाता है।

	Male	Percent	Female	Percent	Total	Percent
Average No. of peers	18.01	17.16	18.09	17.17	18.09	17.16
Activities they do with peers						
Study with them	1140	76.61	1157	82.23	2297	93.96
Hangout with them	1409	94.69	1311	93.18	2720	93.96
Go to movies with them	214	14.38	131	9.31	345	11.92
Go to eat outside with them	690	46.37	640	45.49	1330	45.94
Others	12	0.81	7	0.50	19	0.66
Peers who						
Smoke Tobacco	646	43.41	201	14.29	847	29.26
Chew Tobacco	426	28.63	104	7.39	530	18.31
Drink Alcohol	587	39.45	168	11.94	755	26.08
Other Substance Use	148	9.95	38	2.70	186	6.42
Crime	82	5.51	30	2.13	112	3.87
Gangs	83	5.58	40	2.84	123	4.25
Teased opposite sex	255	17.14	104	7.39	359	12.4
Demonstrations	112	7.53	46	3.27	158	5.46
Arrested	16	1.08	6	0.43	22	0.76
Juvenile Home	16	1.08	6	0.43	22	0.76

## उजली किरण

# नशे के चंगुल से निकलकर बन गया नशे का दुश्मन

रमेश कुमार का जन्म 16 जून को जिला मंडी की तहसील जोगिंद्रनगर के गांव पसलहार, डाकघर चोंतड़ा में एक करीब किसान तुलसी राम के घर हुआ। शुरुआति दिनों में पिता की माली हालत ठीक नहीं होने के कारण परिवार की गुजर-बसर ठीक ढंग से नहीं हो पा रही थी। इसी वजह से रमेश का बड़ा भाई 12 वर्ष की आयु में उचित इलाज न हो पाने के कारण अकाल मृत्यु का शिकार बन गया था। अब रमेश के परिवार में दो भाई और एक बहन थे। परिवार के बाकी बच्चों की सही परवरिश की चिंता लिए उसके पिता किसी से रुपये उधार लेकर नौकरी की तलाश में कुल्लू पहुंच गए। वहां उन्होंने दो साल तक कठिन परिश्रम करके आर्थिक स्थिति मजबूत कर ली और पूरे परिवार को अपने पास कुल्लू बुला लिया।

परिवार में सबसे छोटा होने के कारण रमेश की शिक्षा दीक्षा में कोई कमी नहीं रखी गई। उसे इंग्लिश मिडियम पढ़ाई वाले निजी स्कूल में दाखिल करवाया गया। रमेश भी स्कूल में अच्छी पढ़ाई के साथ-साथ खेलकूद में बढ़चढ़ कर भाग लेता था। स्कूल में वह अक्वल रहता था। स्कूल के दौरान वह हाकी खेलने बाहर जाने लगा। यहीं से उसके जीवन में नशे की बुरी लत ने प्रवेश किया। पहली बार जब उसने बुरी संगत में फंस कर चरस पी तो उसे बहुत आनंद आया।

धीरे-धीरे इस लत में फंस कर वह हाकी के खिलाड़ी से नशे का खिलाड़ी बन चुका था। हालांकि नशे की लत में फंसने के बाद रमेश को इस बात का एहसास

हो चुका था कि नशेड़ी की समाज में कोई इज्जत नहीं होती है। लिहाजा इससे किनारा करना ही बेहतर विकल्प है। वह नशा छोड़ना चाहता था, मगर सही गाइडेंस न मिलने के कारण वह इस दलदल में और धंसता चला गया। अब वह चरस के अलावा नशे की अ और भी

कभी चरस, इंजेक्शन व स्मैक का आदि रहा रमेश अब है नशानिवारण केंद्र का काउंसलर

ल ग था। इसके उसका व्यवहार और भी ज्यादा खराब होने लगा था। अब वह नशे के लिए कुछ भी करने को तैयार रहता था। उसकी नशे की बीमारी बढ़ती जा रही थी। ऐसे में उसने स्मैक भी लेना शुरू कर दिया, जो काफी महंगा नशा था। इसके लिए वह गलत काम करने लगा।

अब उसे स्मैक नहीं मिलने पर उसकी हालत खराब होने लगती थी। इसके अलावा स्मैक की लत ने उसे इतना बेबस कर दिया था कि उसकी माली हालत भी खराब हो चुकी थी। ऐसी हालत में रमेश का परिवार आगे आया और उसे इस नशे

की लत से बाहर निकालने के लिए उसका सहारा बना। स्मैक के नशे के कारण उसका वजन 80 किलोग्राम से घट कर आधा रह गया था। रमेश ने बताया कि नशे की लत के कारण उसके दोस्त भी उससे किनारा कर चुके थे। वहीं इसके कारण उसके पिता भी कर्जदार बन गए थे। इसके चलते उनकी दुकान तक बिक गई। इसी परेशानी में उसके पिता का देहांत हो गया। वहीं उसकी माता की आंखों की रोशनी भी जाती रही। इन विपरित परिस्थितियों में अब उसके लिए सुधरकर परिवार का सहारा बनने के सिवाय कोई रास्ता नहीं बचा था। ऐसे में उसके एक दोस्त आदित्य ने उसकी मदद की और मंडी के झीड़ी में स्थित नशा मुक्ति केंद्र नया सवेरा के बारे में बताया। इतना ही नहीं आदित्य स्वयं रमेश को नशा निवारण केंद्र में लेकर गया और यहां के डायरेक्टर अरविंद ने उसकी मदद को हाथ बढ़ाए। रमेश ने बताया कि उस समय उसके पास इलाज के लिए पैसे तक नहीं थे, तब नया सवेरा संस्था के डायरेक्टर अरविंद ने उसका निशुल्क इलाज करने की व्यवस्था की। इसी मदद के चलते वह नशे के चंगुल से बाहर निकल पाया। इतना ही नहीं रमेश ने अपने परिवार की मदद और नशे की लत का शिकार बाकी लोगों की निस्वार्थ सेवा करने का भी निर्णय लिया। वह नया सवेरा संस्था के साथ जुड़ कर काउंसलर बन गया और नशा मुक्ति अभियान के साथ जुड़ गया। वह नशे की लत का शिकार बाकी लोगों को इसके चंगुल से निकालने को अपने अनुभवों का इस्तेमाल बखूबी कर रहा है।

## प्राइमरी एजुकेशन की कामयाबी पर हो रही तारीफ

### यूनेस्को की ताजा रिपोर्ट में की गई भारत की तारीफ

प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में भारत ने महत्वपूर्ण सफलता हासिल की है। हालांकि इस तरफ ध्यान नहीं दिया गया है, मगर इसे यूनेस्को ने दर्ज किया है। संयुक्त राष्ट्र की इस एजेंसी ने अपनी ताजा रिपोर्ट में स्कूलों में दाखिला करवाने और लड़के-लड़कियों का फासला मिटाने में शानदार प्रगति के लिए जिन देशों की तारीफ की, उनमें भारत भी है।

साल 2000 में 'सबके लिए शिक्षा' के लक्ष्य पर 164 देशों के बीच अंतरराष्ट्रीय सहमति हुई थी। उस पर अमल में विभिन्न देश कितना आगे बढ़े, यूनेस्को ने इसी की समीक्षा की है। इसके मुताबिक प्राइमरी स्कूल स्तर पर भारत में तकरीबन 99 प्रतिशत बच्चों का दाखिला हो रहा है। खास बात यह है कि इनमें लड़के और लड़कियों की संख्या समान है यानी दोहरी कामयाबी। कई दूसरी रिपोर्टों ने भी पुष्टि की है कि मुफ्त एवं अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा का अधिकार कानून (आरटीई) लागू होने के बाद से 6-14 वर्ष आयु वर्ग के बच्चों के स्कूल जाने में भारी बढ़ोतरी हुई है। इसमें बड़ी भूमिका मध्याह्न भोजन योजना की भी है, लेकिन इसका मतलब यह भी है कि मध्याह्न भोजन योजना भी इस ढंग से लागू की जा रही है कि वह अपने लक्ष्य की ओर बढ़ती दिखाई दे रही है।

इसके बावजूद शिक्षा की गुणवत्ता पर सवाल कायम हैं, जिसका जिक्र यूनेस्को ने भी किया है। बहरहाल, एक कामयाबी से दूसरी सफलता की दिशा में बढ़ने का रास्ता साफ होता है। अपेक्षा है कि अब सरकारें पढ़ाई-लिखाई का स्तर सुधारने पर यथोचित ध्यान देंगी। फिलहाल, यह गर्व की बात है कि भारत में आरंभिक शिक्षा में लैंगिक समता प्राप्त कर ली गई है। यह प्रगति तब और बढ़ी लगती है, जब हम यूनेस्को की रिपोर्ट के दूसरे हिस्सों पर गौर करते हैं।

इसके मुताबिक लगभग आधे देश ही सभी बच्चों को प्राइमरी स्कूलों तक लाने में सफल हुए। कई देशों ने लड़कों के मामले में ऐसा किया, मगर लड़कियों के मामले में पिछड़े हुए हैं। यानी लड़के व लड़कियों में फर्क यह वैश्विक स्तर की समस्या है। गौरतलब है कि साल 2000 में तय एजेंडे में छह लक्ष्य थे, जिन पर पूरी प्रगति सिर्फ एक तिहाई देशों ने की है। इनमें प्रेप (प्राइमरी शिक्षा से पहले) स्तर पर सभी बच्चों का दाखिला, उनकी पूरी देखभाल, माध्यमिक स्तर पर भी लैंगिक समता लाने और वयस्क साक्षरता के मामलों में भारत को भी अभी काफी कुछ करना है। मगर यह निर्विवाद है कि अपने देश ने ज्ञान का उजाला सब तक पहुंचाने की दिशा में एक अहम मुकाम हासिल कर लिया है।

## ब्रेन हैमरेज से बचने को करें ये उपाय

ब्रेन हैमरेज यानी दिमाग में किसी प्रकार का रक्तस्राव होना। ऐसा मस्तिष्क में चोट लगने, गिरने या टकराने की वजह से हो सकता है जिसमें व्यक्ति को तेज सिरदर्द, चक्कर आना, देखने में परेशानी और बोलने या समझने में तकलीफ होने लगती है। कई मामलों में टायफॉइड, हैजा आदि रोगों में भी दिमाग में रक्त जमा होने से यह रोग हो सकता है।

### ये हैं प्रमुख लक्षण

अधिक रक्तस्राव से रोगी की याददाश्त चली जाती है और उसे सांस लेने में दिक्कत होने लगती है। साथ ही आंखों की पलकें फैलने लगती हैं। इसके अलावा व्यक्ति के नाक व मुंह से रक्त निकलने लगता है और कई बार मुंह में खून भर जाता है।

### सावधानी बरतें

रोगी को सीधा लिटाकर उसके सिर पर आइस बैग या ठंडे पानी की पट्टी रखें। किसी भी प्रकार की दिमागी चोट लगने पर यदि रोगी को चक्कर, सिरदर्द, उल्टी आने व धड़कनें तेज होने लगे तो उसे लिटाकर सिर ऊंचा रखें। ध्यान रहे कि

कमरे में बिल्कुल भी हवा न आए। रोगी को दूध, मिश्री वाला पानी, कच्चे नारियल का पानी, ग्लूकोज और ठंडा पानी जैसे तरल पदार्थ दें। इसके बाद भी यदि रोगी के सिर या चेहरे पर गंभीर सूजन आए व उसे सिर में हलचल महसूस हो तो डॉक्टर को दिखाएं। अस्पताल ले जाते समय रोगी को लिटाकर रखें और ठंडे पानी की पट्टी करते रहें ताकि रक्तस्राव रुक जाए।

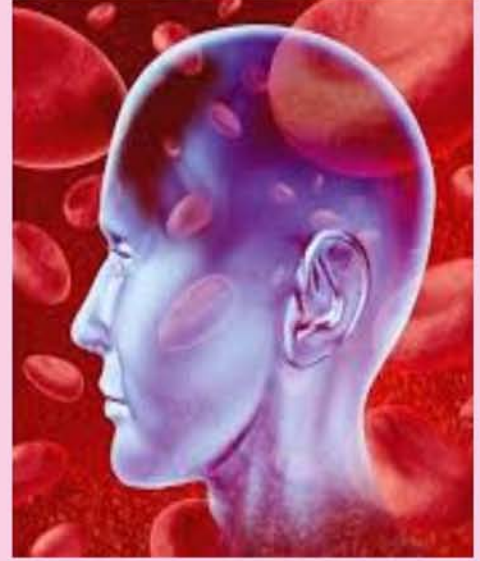
### गंभीर अवस्था

ज्यादातर मामलों में ब्रेन हैमरेज की गंभीर अवस्था होने पर मरीज को एलोपैथिक इलाज के लिए फौरन अस्पताल ले जाया जाता है और बाद में होम्योपैथिक उपचार किया जाता है।

### लक्षणों पर आधारित उपचार

डॉक्टर सबसे पहले मरीज को अर्निका टिंचर देते हैं। इसके अलावा अर्निका टिंचर का लोशन बनाकर इसमें सूती पट्टी भिगोकर सिर पर रखते हैं। गंभीर स्थिति में रक्तस्राव रोकने के लिए मिलीफोलियम और फेरमफॉस जैसी बायोकेमिक दवाएं देते हैं। इसके बाद

लक्षणों के आधार पर हाइपेरिकम, बेलेडोना, फेरमफॉस, चायना, हेमामिलस, इपिकाक, जिरेनियम मैकुलेटम आदि दवाएं दी जाती हैं।



## गर्मी से बचने को खाएं आम, टमाटर, लीची, अंगूर

बीट द हीट... थोड़ा सा आम.. थोड़ा सा टमाटर। जी हां ये फल और सब्जियां खाकर आप भरी गर्मी में रह सकते हैं कूल-कूल...

### आम

फलों का राजा आम सभी रूपों में एक संपूर्ण फल है। कच्चे आम से बना हुआ पना लू से बचाव करता है। इसमें विटामिन-सी पर्याप्त मात्रा में पाया जाता है। विटामिन-सी शरीर की रोग प्रतिरोधक शक्ति को बढ़ाकर रोगों से बचाता है। यही नहीं आम पाचन तंत्र को भी मजबूत करने का काम करता है।

### मात्रा

रोजाना एक आम काफी। जिन लोगों को डायबिटीज की समस्या है, वे डॉक्टर या डाइटीशियन की सलाह से ही इन्हें खाएं।

### अंगूर

अंगूर मीठे और पानी से भरे होते हैं। इन्हें डाइट में नियमित रूप से शामिल करने से पाचन में गड़बड़ी की समस्या नहीं रहती। अंगूर शरीर में पानी की कमी को दूर करते हैं। ये ओआरएस के घोल की तरह शरीर को फटाफट ऊर्जा देते हैं।

### मात्रा

एक दिन में 100 ग्राम अंगूर खा सकते हैं।

### लीची

यह भी पानी और पोषक तत्वों से भरी कुदरत की स्वादिष्ट देन है। यह ब्लड प्रेशर को कंट्रोल करने का काम करती है। इसमें कैलोरी नहीं होती इसलिए इसको खाने से मोटापा नहीं बढ़ता। साथ ही पर्याप्त मात्रा में ऊर्जा मिलने से हम एक्टिव बने

रहते हैं।

### मात्रा

रोजाना 100 ग्राम लीची खा सकते हैं।

### तरबूज

यह गर्मियों में शरीर में पानी की कमी दूर करता है। यह बहुत जल्दी पचता है और भूख भी बढ़ाता है। तरबूज में विटामिन-ए, बी, पोटेशियम, मैग्नीशियम और विटामिन-बी के साथ आवश्यक महत्वपूर्ण एंटीऑक्सीडेंट भी पाए जाते हैं। यह जीरो कैलोरी फल है जो इम्यून सिस्टम को मजबूत करता है।

### मात्रा

2-3 स्लाइस काफी। मधुमेह में तरबूज न खाएं।

### खीरा

इसे खाने से पेट भरता है और कब्ज की समस्या भी दूर होती है। खीरे में लगभग 96 प्रतिशत पानी और शेष चार प्रतिशत फाइबर होते हैं। इसमें सिलिका नामक तत्व प्रचुर मात्रा में पाया जाता है जो ऊतकों को जोड़ने का काम करता है। इसमें कैलोरी नहीं होती।

### प्रयोग

सलाद या रायता बनाकर इस्तेमाल कर सकते हैं।

### टमाटर

लाइकोपीन युक्त टमाटर पानी से भरपूर होता है। एक शोध के अनुसार रोजाना 5 टमाटर खाने से धूप से हुए नुकसान से बचा जा सकता है।

### प्रयोग

टमाटर को उबालने पर इसमें मौजूद लाइकोपीन और अधिक बढ़ जाता है। इसे सलाद, सूप, कैचअप, प्यूरी और सब्जी बनाकर इस्तेमाल करें।



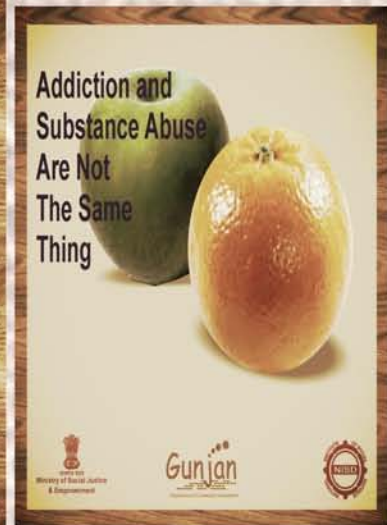
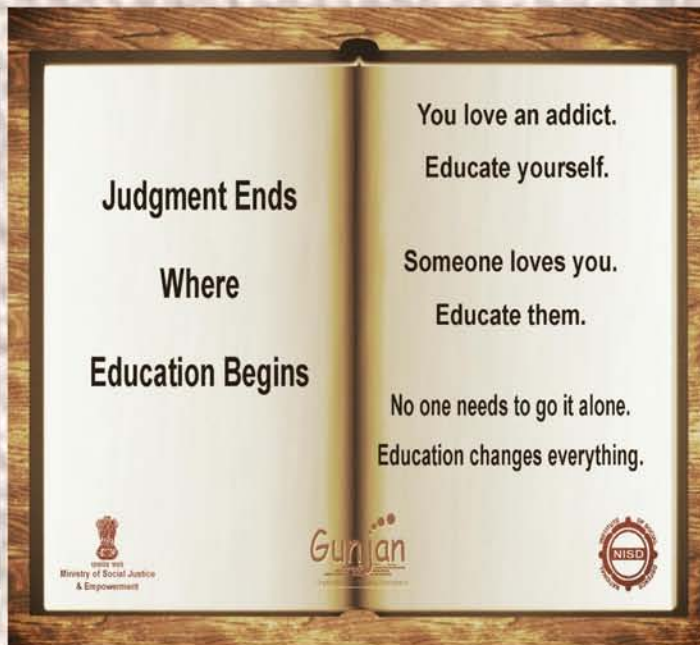
# संस्था की गतिविधियां

क्षेत्रीय अस्पताल के चिल्ड्रन वार्ड का माहौल बदला  
गुंजन संस्था ने बाल उमंग कार्यक्रम शुरू किया



धर्मशाला। क्षेत्रीय अस्पताल धर्मशाला के चिल्ड्रन वार्ड का नक्शा बदल गया है। इस वार्ड में बीमारी के कारण दाखिल किए गए बच्चों को घर जैसा माहौल मिलने लगा है। इस वार्ड में पुराने बैड, चिल्लाते-रोने की आवाजें और अस्पताल का बेचैन करने वाला माहौल बदला जा चुका है। अब यहां बच्चों के रोने-चिल्लाने के बजाय उनके खेलने व खिलखिलाने की आवाजें सुनीं हैं। इस वार्ड के विस्तरों की शकल सूरत बदल दी गई है। इनके बीच पेशेंट प्राइवेटि कटन लगा दिए गए हैं और वार्ड की दीवारों पर बच्चों के प्ले स्कूल की तरह आकर्षक पेंटिंग्स बनाई गई हैं। इसके अलावा यहां इंजेक्शन या दवा देने के लिए आने वाली नर्सों की जगह बच्चों को कहानियां सुनाने व खिलौने देखकर खेलाने वाले स्वयंसेवी देखने को मिल रहे हैं। वार्ड में बिजली की फिटिंग्स तक बदली गई हैं। वार्ड का यह कायाकल्प सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय भारत सरकार के सहयोग से कार्यरत सिद्धबाड़ी स्थित गुंजन संस्था ने अपने बाल उमंग कार्यक्रम के तहत किया है। गुंजन के एग्जिक्यूटिव डायरेक्टर संदीप परमार ने बताया कि संस्था ने वार्ड अस्पताल प्रशासन को सौंप दिया है। यहां हर रोज संस्था के दो स्वयंसेवी मौजूद रहेंगे। उन्होंने बताया कि इस कार्यक्रम का उद्देश्य न केवल इलाज बच्चों को खुशनुमा माहौल देना है, बल्कि गंभीर रूप से बीमार बच्चों के इलाज में भी सहायता मुहैया करवाना है। उन्होंने कहा कि इसके लिए बाकी स्वयंसेवी संस्थाओं व समाजसेवियों की मदद ली जाएगी। परमार ने बताया कि अगर किसी बच्चे के महंगे इलाज के लिए परिजनों को आर्थिक परेशानी होगी, तो संस्था की ओर से उनकी सहायता भी की जाएगी। इसके लिए उन्होंने समाजसेवियों से मदद का अह्वान किया है। उन्होंने कहा कि अगर कोई व्यक्तिगत तौर पर इस वार्ड में बच्चों की मदद के लिए आना चाहता है, तो उसका भी स्वागत है। इसके लिए वह मोबाइल नंबर 94590-82624 पर संपर्क कर सकता है। उधर, अस्पताल के चाइल्ड स्पेशलिस्ट डा. अजय दत्ता ने बताया कि वार्ड का माहौल बदलने से बच्चों को इलाज में सुविधा मिलेगी। उन्होंने कहा कि रिक्रिएशन थैरेपी से बच्चों को जल्द स्वस्थ करने में भी मदद मिलेगी।

## आई.ई.सी. मेटिरियल डवेलप्मेंट पोस्टर श्रृंखला



सत्यमेव जयते

Ministry of Social Justice  
& Empowerment

**Gunjan**  
Organisation for Community Development

